सम्यक् दर्शन

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सम्यक् दर्शन का अर्थ है सकारात्मक सोच, सकारात्मक दृष्टि। लौकिक और पारलौकिक जगत के उत्थान के लिए सम्यक् दर्शन का अधिक महत्त्व है। सम्यक् दर्शन दृष्टि परिवर्तन का उपक्रम है। सम्यक् दर्शन मोक्ष मार्ग का साधन है। दिशा को बदलने से दशा बदल जाती है। एक अच्छा डाक्टर बनने के लिए मनुष्य के शरीर का विधिवत अध्ययन होना चाहिए। विद्यार्थी को आगे बढ़ने के लिए लक्ष्य को निर्धारित करना पड़ता है। जिस क्षेत्र में विद्यार्थी को आगे बढ़ना है उस क्षेत्र से सम्बन्धित विषयों का ज्ञान प्राप्त करना पड़ता है। इसी से मनुष्य लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

सभी जीवों को समान समझना सम्यक् दर्शन है। सर्वत्र अद्वैत का दर्शन करना चाहिए। अद्वैत की परम्परा में दृष्टि में कोई भेद नहीं रहता। वहां दो की कल्पना का कोई आधार ही नहीं है। दृश्य जगत में जो कोई नानात्व दिखाई देता है वह केवल भ्रान्ति है। हर दार्शनिक परम्परा इसी आधार को लेकर आगे बढ़ती है। अस्तित्व की अपेक्षा समूचा विश्व एक है। व्यक्ति की अपेक्षा से प्रत्येक पदार्थ का स्वतंत्र अस्तित्व है। बगीचा एक इकाई है, उसमें जितने वृक्ष हैं, सबकी स्वतंत्र सत्ता है। अनेकता में एकता का चिंतन और व्यवहार ही भावात्मक एकता है। व्यावहारिक दृष्टि से सम्यक् दृष्टि वह है, जो पूरी मानवता को एकसमान समझती है। एक राष्ट्र में अनेक प्रान्त होते हैं, एक प्रान्त में अनेक धर्म होते हैं, एक जाति में अनेक व्यवसाय होते हैं, एक व्यवसाय में अनेक व्यक्ति होते हैं और एक व्यक्ति के अनेक विचार होते हैं। सबकी दृष्टि अलग–अलग होती है। जहां कहीं बंटवारे की स्थिति आती है, वहां एकता खण्डित हो जाती है।

मनुष्य जाति एक है। किसी को सताना, कष्ट पहुचाना, तिरष्कार करना क्या स्वयं को मारने सताने, कष्ट पहुंचाने और तिरष्कृत करने का प्रयत्न नहीं है? वास्तव में किसी भी जीव को

सताना स्वयं को सताना है। जब ऐसी दृष्टि हो जाती है तो उसे सम्यक् दृष्टि कहते हैं। आगमों में कहा गया है कि पुरूष! तूं जिसे हनन योग्य मानता है, वह तूं ही है, जिसे तूं परिताप देने योग्य मानता है, वह तूं ही है। इस आत्मतुला की भूमिका पर विश्व की सब आत्माओं की एकता का प्रतिपादन किया गया है। यही सम्यक् दृष्टि है। यह अद्वैत एकत्व या भावात्मक एकता का सिद्धान्त भारतीय संस्कृति के कण–कण में रमा हुआ है। जो व्यक्ति इस अद्वैत को सहमति नहीं देता उसकी दृष्टि सम्यक् नहीं हो सकती। जहां स्वार्थ रहता है, वहां पर दृष्टि सीमित हो जाती है। यह मेरा परिवार है, यह मेरा भाई है, यह मेरा पुत्र है, यह मेरी पत्नी है, यह मेरी मॉ है, ये सब भावनाएं एकांगी हैं और दृष्टि को संकुचित कर देती हैं। जाति, वर्ण, वर्ग, धर्म, प्रान्त, राष्ट्र, ऐश्वर्य, सत्ता आदि कृत्रिम भेद हैं। इन्हें मुख्य मानकर प्रेम, सद्भाव, विश्वास, न्याय की हत्या करना मानवीय मूल्यों की हत्या है।

कुछ दृष्टान्तों के द्वारा सम्यक् दृष्टि का विवेचन किया जा रहा है। समुद्रविजय के पुत्र अरिष्टनेमि की बारात शौरिपुर से चली। मथुरा के राजा उग्रसेन की पुत्री राजीमती के साथ उनका सम्बन्ध निश्चित हुआ। बारात मथुरा पहुंची। वहां एक बाड़े में बन्दी पशु कराह रहे थे। अरिष्टनेमि ने अपने सारथी से पूंछा कि ये पशु क्यों चिल्ला रहे हैं? सारथी ने कहा इनका अन्तिम समय निकट आ गया है। ये सब बारातियों के भोजन में काम आयेंगे। अरिष्टनेमि के कानों में इस बात ने मानो शीशा डाल दिया। उनकी चेतना को झटका लगा। उन्होंने सोचा कि मेरे लिए इतने पशुओं की निर्मम हत्या? मुझे जीना अच्छा लगता है तो इन्हें क्यों नहीं लगेगा? इन निरीह पशुओं की आत्मा भी मेरी आत्मा के समान है। इस विचारधार ने उनको वहां से मोड़ दिया। विवाह किये बिना ही वे लौट गये और प्रब्रजित हो गये। उनकी सम्यक् दृष्टि जागृत हो गयी। जिसकी सम्यक् दृष्टि जागृत हो जाती है, उसके लिए स्व और पर में कोई भेद नहीं रहता।

संत नामदेव को उनकी मॉ ने पेड़ से लकड़ी काटकर लाने को कहा। नामदेव लकड़ी काटने के लिए गये। वृक्ष की आत्मा और अपनी आत्मा में अभेद का दर्शन होते ही उनके हाथ रुक गये। उनकी कुल्हाड़ी का प्रहार वृक्ष पर न होकर वहीं थम गया। उन्होंने अपने भाव पर कुल्हाड़ी मार ली। उनको यह ज्ञान हो गया कि जैसे मुझे दुःख या दर्द की अनुभूति हो रही

है, वैसे ही इन वृक्षों को भी होती है। कबीर का पुत्र कमाल जंगल में घास काटने गया। घास के बीच में खड़ा होते ही उसको यह अनुभव हुआ है कि जो प्राणधारा इस घास में प्रवाहित है वही मेरे अन्दर भी है। इस अनुभूति में इतना खो गया कि घास काटना भूलकर सांझ तक वहीं खड़ा रहा।

यह प्रसंग सम्यक् दर्शन का प्रसंग है। इनसे प्रेरणा लेकर ही व्यक्ति आंतरिक दुर्भावना, वैमनस्य, अलगाववादी दृष्टिकोण, तोड़फोड़, लूटखसोट, मारकाट आदि प्रवृत्तियों से दूर रहे तो सम्पूर्ण मानव जाति एक भावात्मक एकता में बंधकर निश्चिंतता से जी सकती है। सम्यक् दर्शन और सम्यक् दृष्टि के प्राप्त हो जाने से स्व और पर का भेद मिट जाता है। सभी में एकता दिखाई देती है। ऐसी भावना एकता के सूत्र में बांधती है। जहां पर ऐसी भावना नहीं रहती, वहां पर भावात्मक एकता का बीज नहीं फल सकता। सम्यक् दृष्टि के लिए अखण्डता और आत्मतुला वाली चेतना का जागरण आवश्यक है।